भारत में पारंपरिक ज्ञान प्रणाली और उसका प्रबंधन

Ms. Swati Garg

Assistant Professor

Mahalakshmi College For Girls

Ghaziabad

सार

भारत में पारंपरिक ज्ञान का **प्रबंधन** क्रमिक चरणों से होकर गुजरा है। इन **चरणों** में न केवल प्रौद्योगिकी को अपनाना बल्कि सामाजिक जागरूकता का निर्माण भी शामिल है। यह स्पष्ट है कि भारतीय पारंपरिक ज्ञान वैज्ञानिक और गैर.वैज्ञानिक दोनों ही दृष्टियों से अंतर्निहित है। विडम्बना यह है कि दोनों शब्द भारतीयों के जीवन.जगत में रचे.बसे हैं। भारत में पारंपरिक ज्ञान **प्रणाली** सीखने की पारंपरिक पद्धति पर आधारित है। जो व्यावहारिक अनुप्रयोग और अनुप्रयोग के **सिद्धांतों** पर आधारित है। अधिक लोकतांत्रिक और समावेशी **ज्ञान** प्रणाली बनाने के लिए वैज्ञानिक समुदाय सहित **विभिन्न** समूहों द्वारा इस पद्धति को अपनाया गया है। यह पेपर पारंपरिक ज्ञान की संरचना इसकी **वितरण** प्रणाली; इसके चयनात्मक अनुप्रयोग और उपयोग; प्रतिस्पर्धी समूहों की प्रतिक्रियाओं और अंततः ज्ञान प्रणाली को लोकतांत्रिक बनाने में तकनीकी **मुद्दों** के संदर्भ में पारंपरिक स्वदेशी ज्ञान प्रबंधन का पता लगाता है।

सूचक शब्द

स्वदेशी ज्ञान; ज्ञान प्राप्त करना; सामाजिक जागरूकता; तकनीकी

परिचय

ज्ञान प्रबंधन का प्रश्न उतना ही पुराना है जितना ज्ञान की खोज। ज्ञान का सृजन; **संरक्षण**; विकास और अनुप्रयोग स्वदेशी और सार्वभौमिक **दोनों** हितों को दर्शाता है। ज्ञान प्रबंधन पर अनुसंधान और साहित्य में उल्लेखनीय वृद्धि हो रही है। **ज्ञान** प्रबंधन का दायरा व्यापक हो रहा है क्योंकि **प्रौद्योगिकी** बेहतर प्रदर्शन के लिए खुद को नया आकार दे रही है। जैसे.जैसे सामाजिक प्रासंगिकता और नैतिक मुद्दे अधिक महत्वपूर्ण होते जाते हैं। यह दायरा मानवीय और तकनीकी आयामों को भी जोड़ता है। यह पेपर पारंपरिक ज्ञान की संरचना; इसकी **वितरण** प्रणाली; इसके चयनात्मक अनुप्रयोग और उपयोग; हाशिए

पर रहने वाले समूहों की प्रतिक्रियाओं और अंततः ज्ञान प्रणाली को लोकतांत्रिक बनाने में तकनीकी क्रांति के संदर्भ में पारंपरिक स्वदेशी ज्ञान प्रबंधन का पता लगाता है।

पारंपरिक ज्ञान की संरचना

भारत का पारंपरिक ज्ञान वैदिक साहित्य से शुरू होता है। वैदिक साहित्य में चार वेद शामिल हैं . ऋग; यजुर; साम और अथर्व। चार वेदों में सबसे प्रारंभिक ऋग्वेद में 1028 ऋचाएँ हैं। देवताओं की स्तुति में भजन गाए गए। यजुर्वेद में यज्ञ के समय पालन किये जाने वाले नियमों का उल्लेख है। सामवेद यज्ञ के दौरान जप का प्रावधान करता है। अथर्ववेद अनुष्ठानों के बारे में बताता है। धर्म शास्त्र दैनिक जीवन में पालन किये जाने वाले नियमों के बारे में बताते हैं। पारंपरिक ज्ञान प्रणाली के निर्माण में छह वेदांग भी महत्वपूर्ण हैं। वे हैं शिक्षा; कल्प; व्याकरण; निरुक्त; छंद और ज्योतिष। पारंपरिक ज्ञान भी ब्राह्मण; उपनिषद; आरण्यक; रामायण; महाभारत और पुराणों से लिया गया है। उपनिषद दार्शनिक ग्रंथ हैं जो दार्शनिक विषयों से संबंधित हैं आत्मा; निरपेक्ष; संसार की उत्पत्ति और प्रकृति के रहस्य जैसे विषय।
कौटिल्य द्वारा लिखित अर्थशास्त्र में शासन का ज्ञान बताया गया है। यह पाठ निचले स्तर के प्रबंधन से लेकर विदेश नीति तक के कई पहलुओं की व्याख्या करता है। यह राजाओं और राज्यपाल को सलाह देता है। अर्थशास्त्र में 15 पुस्तकें और 180 अध्याय हैं लेकिन इसे तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है। पहला राजा और उसकी परिषद और सरकार के विभागों से संबंधित है; दूसरा नागरिक और आपराधिक कानून के साथ; और तीसरा कूटनीति और युद्ध के साथ। दार्शनिक ज्ञान के क्षेत्र में भारतीय दर्शन की छह प्रणालियों का अक्सर उल्लेख किया जाता है। वे हैं न्याय; वैशेषिक; सांख्य; योग; पूर्व मीमांसा और उत्तर मीमांसा। संस्कृत में वैदिक साहित्य की मात्रा के अलावा; तमिल में संगम साहित्य; पाली और प्राकृत में बौद्ध और जैन साहित्य का एक बड़ा हिस्सा उपलब्ध है।

ज्ञान सृजन

रहस्योद्घाटन; अंतर्ज्ञान और अनुभव भारत में पारंपरिक ज्ञान का आधार हैं। ऋषि या योगी के नाम से जाने जाने वाले उल्लेखनीय पुरुषों ने उपरोक्त विधियों से ज्ञान प्रणाली का निर्माण किया। मौखिक निर्देशों के माध्यम से ज्ञान को एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति या एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक स्थानांतरित किया जाता था। इसे गुप्त एवं पवित्र रखा गया। बाहरी लोग ज्ञान प्राप्त करने के योग्य नहीं थे। लिखित प्रथाएँ बहुत बाद में सामने आईं। ज्ञान के ऐसे प्रसार का प्रमुख मंच ताड़ का पत्ता था। इस प्रकार वेदों और अन्य साहित्य को बाद में संस्कृत में दर्ज किया गया। मूल ताड़ के पत्ते की प्रतिलिपि बनाने में शिष्यों की एक टीम ने सहायता की; जो बचपन से ही अपने गुरु के साथ रहते थे और सीखते

थे। ऐसे कार्यों की नकल करना दो **समस्याओं** से भरा था। एक थी सही सुनवाई और **दूसरी** थी रिकॉर्डिंग। दोनों व्यक्तिगत धारणा और बुद्धि पर निर्भर थे। ऐसी नकल विधियों में भिन्नताएँ **स्पष्ट** हैं और नकल के आगे के अभ्यास अधिक **विविधताओं** और विरोधाभासों को दर्शाते हैं। इस प्रकार **पारंपरिक** साहित्य के ग्रंथों में विविधताएँ मौजूद हैं। **व्याख्या** और अनुवाद की समस्या ज्ञान के सृजन में एक और मुद्दा है। पश्चिमी विद्वानों को संस्कृत ग्रंथों का अंग्रेजी में अनुवाद करते समय इस **प्रकार** की समस्या का सामना करना पड़ा। यहां तीन **महत्वपूर्ण** मुद्दों पर विचार करना चाहिए। सबसे पहले उन्हें कई पाठ विविधताओं के बीच प्रामाणिक पाठ का निर्णय करना चाहिए। दूसरा उन्हें कई पाठों की तुलना करके शब्दों और अन्य अमूर्त शब्दों की **व्याख्या** करनी चाहिए। तीसरा उन्हें पाठ का एक भाषा से दूसरी भाषा में अनुवाद करते समय समकक्ष **शब्दों** का पता लगाना चाहिए।

ताड़ के पत्तों में लिखने के अलावा; **शिलालेखों** ने ज्ञान सृजन को अधिक ठोस प्रणाली प्रदान की। सम्राट अशोक के शिलालेख इस प्रकार के पहले शिलालेख थे। इन्हें पहली बार 1837 में जेम्स प्रिंसेप द्वारा पढ़ा गया था। शिलालेख पाली और **प्राकृत** भाषाओं में लिखे गए हैं। लेखन के लिए **ब्राह्मी** लिपि का प्रयोग किया जाता था। ये शिलालेख अशोक के धम्म और उसके अधिकारियों को दिए गए **निर्देशों** से संबंधित हैं। वे कलिंग के साथ उसके युद्ध का विवरण देते हैं। वे अपने राज्य के भीतर धम्म को बढ़ावा देने के उनके प्रयासों की भी व्याख्या करते **हैं।**

ज्ञान सृजन में सीमाएँ ग्रंथों के अलावा भौतिक साक्ष्य जो पुरातत्वविदों को प्राचीन जीवन का बेहतर पुनर्निर्माण करने की अनुमति देते **हैं** जैसे मिट्टी के बर्तन; उपकरण; आभूषण; घरेलू वस्तुएं आदि। कलाकृतियों को पुनः प्राप्त करना **पुरातात्विक** उद्यम की शुरुआत है। वर्तमान **में** कई पुनर्निर्माण अटकलें बनी हुई हैं। पुरालेख क्या **प्रकट** कर सकता है इसकी सीमाएँ हैं। कभी **तकनीकी** सीमाएँ होती हैं; कभी अक्षर बहुत हल्के ढंग से **उत्कीर्ण** होते हैं; और इस प्रकार पुनर्निर्माण **अनिश्चित** होते हैं। इसके अलावा शिलालेख क्षतिग्रस्त हो सकते हैं; अक्षर गायब हो सकते हैं; शिलालेखों में **प्रयुक्त** शब्दों के सटीक अर्थ के बारे में निश्चित होना हमेशा आसान नहीं होता कुछ किसी विशेष स्थान या समय के लिए विशिष्ट हो सकते हैं। हालाँकि कई हज़ार शिलालेख खोजे जा चुके हैं; लेकिन सभी को पढ़ा और अनुवादित नहीं किया जा सका है। इसके अलावा और कई शिलालेख समय की मार से बच नहीं पाए होंगे। अत वर्तमान में जो उपलब्ध है वह संभवत जो अंकित किया गया था उसका केवल एक अंश मात्र है।

ज्ञान संचरण

वैदिक काल में ज्ञान हस्तांतरित करने की एक अनोखी प्रथा विद्यमान थी। व्यवसाय और जन्म के अनुसार समाज का वर्गीकरण किया गया था। विशेषाधिकारों को सामाजिक स्तरीकरण या पारिवारिक उत्पत्ति के अनुसार परिभाषित और सीमांकित किया गया था। वर्ण व्यवस्था स्वाभाविक रूप से ज्ञान प्राप्त करने से जुड़ी थी। चार सामाजिक संरचना अर्थात् ब्राह्मण; क्षत्रिय; वैश्य और शूद्र पदानुक्रम में रैंकिंग को दर्शाते हैं। ज्ञान और अन्य विशेषाधिकार प्राप्त करने में ब्राह्मण शीर्ष पर और शूद्र सबसे नीचे हैं। इस व्यवस्था को शास्त्र ने ही स्वीकृत किया था।

ज्ञान अनुप्रयोग

पारंपरिक ज्ञान प्रणाली में वैदिक और उससे संबंधित साहित्य शामिल हैं। ज्ञान प्राप्त करना पूरी तरह से पारंपरिक साहित्य सीखने पर आधारित था। ऐसे ज्ञान का अनुप्रयोग निजी और सार्वजनिक क्षेत्रों पर निर्भर करता है। निजी क्षेत्र घर पर कर्तव्यों और परिवार के सदस्यों के साथ संबंधों के बारे में बताता है। सार्वजनिक क्षेत्र समाज और राज्य के प्रति व्यक्ति के कर्तव्यों का गठन करता है। वास्तव में धर्मशास्त्र व्यक्तिगत कर्तव्यों को परिभाषित करने में सर्वोत्तम दिशानिर्देश हैं।

ज्ञान विकास का संघर्ष

पारंपरिक ज्ञान की सत्ता को बुद्ध और महावीर की शिक्षाओं से चुनौती मिली। इसके अलावा भौतिकवादी और नास्तिक दर्शनों द्वारा आस्तिक खोज पर सवाल उठाए गए। चुनौतियाँ अनेक देवताओं के अस्तित्व से लेकर वर्ण व्यवस्था के संदर्भ में मानवीय भेदभाव तक हैं। इसके अलावा ज्ञान के पारंपरिक आधार को चुनौती देने के लिए तर्कवाद और अनुभववाद को भी बढ़ावा दिया जाता है। प्रकृति; आत्मा; मृत्यु; पुनर्जन्म और अन्य दुनिया जैसे दार्शनिक प्रश्नों ने भी ज्ञान प्रणालियों की कई शाखाओं को रास्ता दिया। वेदों के भाष्यकारों ने भी व्यक्ति एवं सिद्धान्तों पर आधारित अनेक प्राधिकारियों की स्थापना की। इस प्रकार शंकर; रामानुज और मधुव के प्रयासों के कारण अद्वैत; विशिष्टाद्वैत और द्वैत की प्रणालियाँ उभरीं।

पुनर्जागरण और निर्णायक

ज्ञान प्रबंधन के लिए अभिजात्यवादी दृष्टिकोण को पुनर्जागरण विचारकों और औपनिवेशिक सुधारवादी एजेंडे द्वारा बढ़ावा दिया गया था। पहली बार पारंपरिक ज्ञान का मूल्य और आधुनिकतावादी दृष्टिकोण की आवश्यकता आमने.सामने आई। परिणाम बहुत प्रभावशाली था क्योंकि पारंपरिक ज्ञान पर कुलीन सत्ता का एकाधिकार टूट गया था। कुलीन आधार से जन आधार की ओर बदलाव शुरू हो गया था और आधुनिकतावादी एजेंडे ने परंपरा की जड़ों को चुनौती दी थी। मूल मुद्दा यह था कि ज्ञान प्रणाली की पारंपरिक जड़ को कैसे संरक्षित किया जाए। एकमात्र विकल्प पारंपरिक ज्ञान के रहस्यों को उजागर करना और धर्मग्रंथों को उसकी सामाजिक पृष्ठभूमि की परवाह किए बिना मानवता तक पहुंचाना था।

विदेशी विद्वानों का योगदान

मैक्स मुलर और पॉल ड्यूसेन जैसे जर्मन इंडोलॉजिस्ट के प्रयासों और ब्रिटिश शासन के समर्थन के परिणामस्वरूप संस्कृत ग्रंथों का अंग्रेजी या जर्मन में अनुवाद हुआ। ये अनुवाद गैर.संस्कृत विद्वानों के लिए पारंपरिक ज्ञान प्रणाली को जानने का मार्ग प्रशस्त करते हैं।

तकनीकी विकास

प्रिंटिंग मशीन के आविष्कार ने ज्ञान प्रबंधन में मौलिक क्रांति ला दी। आज आईसीटी ज्ञान प्रणालियों पर हावी है। पारंपरिक ज्ञान प्रबंधन की प्रथा कमजोर हो गई है और पारंपरिक ज्ञान प्रणालियों के संरक्षण और प्रबंधन के लिए दुनिया भर में कई संगठन अपने प्रयास कर रहे हैं। मूल प्रश्न यह है कि इससे किसे और किस मात्रा में लाभ होने वाला है। आज इंटरनेट की सहायता से कोई भी; कभी भी; कुछ भी बिना किसी शर्त के पढ़ सकता है; स्वीकार कर सकता है व प्रसारित कर सकता है। जैसे कि आज इंटरनेट पर योग ध्यान और ज्योतिष की जानकारी प्रदान करने वाली कई वेबसाइटें हैं पर कभी ध्यान योग और ज्योतिष के लिए विशेषज्ञ हुआ करते थे। यह तो सिर्फ एक उदाहरण है परंतु आज यही सब निश्चित रूप से जीवन के हर पहलू में आईसीटी के अनुप्रयोग के कारण हो रहा है। महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि आईसीटी पारंपरिक क्षेत्र में ज्ञान प्रबंधन में कैसे मदद करता है। निहितार्थ यह है कि ज्ञान की सुरक्षा कैसे की जाए और अनैतिक संगठनों और व्यक्तियों को अपने हितों के लिए पारंपरिक ज्ञान को भ्रष्ट करने से कैसे रोका जाए। आईसीटी पारंपरिक ज्ञान के प्रबंधन में मदद करने के साथ.साथ मदद करने में विफल भी है। यह मूल्य.युक्त नहीं बल्कि मूल्य.मुक्त है। आईसीटी आधारित ज्ञान प्रणालियों का उपयोग करने में व्यक्तिगत भेदभाव और जागरूकता को उच्च महत्व दिया जा सकता है।

समाधान

चूँकि शास्त्र और गुरु कई रास्ते और संभावनाएँ दिखाते हैं। दृष्टिकोण के वैकल्पिक तरीके को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है। पारंपरिक ज्ञान के प्रबंधन में आईसीटी के क्षेत्र में भी यही सच हो सकता है। यदि यह वास्तविकता है(तो एक व्यक्ति के दृष्टिकोण से तर्कसंगत दृष्टिकोण क्या होगा\

एक उपनिषद का श्लोक है%

मुझे असत्य से सत्य की ओर ले चलो।

मुझे अंधकार से प्रकाश की ओर ले चलो।

मुझे मृत्यु से अमरत्व की ओर ले चलो।

सूचना संकलन के लिए चुनौतियाँ

ऐसे पारंपरिक ज्ञान के लिए सूचना संकलन करते समय प्रशासकों और व्यक्तकारी को समस्याओं का सामना करना पड़ता है। एकाधिक विमर्श का अस्तित्व ऐसे सूचना संकलन की प्रामाणिकता पर प्रश्नचिह्न लगाता है। हालाँकि सूचना संकलन व्यक्तकारी अस्वीकरण के माध्यम से शर्मनाक सवालों से बच सकते हैं। सूचना संकलन उपयोगकर्ता ज्ञान प्रबंधन प्रणाली के साथ बातचीत के एक नए स्तर का आनंद लेते हुए; समय के साथ

प्रासंगिक जानकारी जोड़ सकते हैं। चूंकि ज्ञान प्रबंधन लोगों को न केवल ज्ञान बल्कि प्रौद्योगिकी से भी जोड़ रहा है। इसलिए उन्हें उचित ज्ञान प्रबंधन प्रणाली बनाने के लिए प्रासंगिक और प्रामाणिक जानकारी से सुसज्जित होना चाहिए।

भारत में पारंपरिक ज्ञान प्रणाली और उसका प्रबंधन

भारत पारंपरिक ज्ञान प्रणालियों से समृद्ध देश है यहां विरासत स्वरूप यह प्रणालियाँ पीढ़ियों से चली आ रही है। ये ज्ञान प्रणालियाँ विभिन्न क्षेत्रों को शामिल करती हैं- जैसे चिकित्सा, कृषि, हस्तशिल्प और आध्यात्मिकता । पारंपरिक ज्ञान प्रणाली का प्रबंधन अद्वितीय चुनौतियाँ भी प्रस्तुत करता है।

भारत में विविध समुदायों ने सदियों से अपने पारंपरिक ज्ञान को संरक्षित और प्रसारित किया है। यह ज्ञान उनकी सांस्कृतिक प्रथाओं में गहराई से निहित है और सतत विकास और सामुदायिक कल्याण के संदर्भ में अत्यधिक मूल्यवान है। हालाँकि, इस ज्ञान प्रणाली के प्रबंधन के लिए सावधानीपूर्वक विचार और समर्थन की आवश्यकता होती है।

भारत में पारंपरिक ज्ञान के प्रबंधन में प्राथमिक चुनौतियों में से एक बौद्धिक संपदा अधिकारों का मुद्दा है। पारंपरिक ज्ञान का अक्सर उचित स्वीकृति या इसे धारण करने वाले समुदायों को मुआवजा दिए बिना शोषण किया जाता है। इससे दुरुपयोग और अनुचित व्यावसायीकरण की चिंताएं पैदा हुई हैं। इसलिए, ऐसे तंत्र स्थापित करना महत्वपूर्ण है जो स्वदेशी समुदायों के बौद्धिक संपदा अधिकारों की रक्षा करें और यह सुनिश्चित करें कि उन्हें उचित मान्यता और लाभ मिले।

एक चुनौती पारंपरिक ज्ञान के दस्तावेज़ीकरण और संरक्षण भी है। कई पारंपरिक प्रथाएं मौखिक प्रकृति की हैं, जिससे ज्ञान को सटीक रूप से रिकॉर्ड करना और संचारित करना मुश्किल हो जाता है। इसके अलावा, समाज में तेजी से हो रहे बदलाव और वैश्वीकरण का प्रभाव पारंपरिक ज्ञान प्रणालियों की निरंतरता के लिए खतरा पैदा करता है। इस ज्ञान को दस्तावेजित करने और संरक्षित करने का प्रयास इस तरीके से किया जाना चाहिए जो सांस्कृतिक संदर्भ का सम्मान करता हो और भविष्य की पीढ़ियों के लिए इसकी पहुंच सुनिश्चित करता हो।

इसके अलावा, पारंपरिक ज्ञान के प्रसार और प्रचार के लिए विभिन्न हितधारकों की सक्रिय भागीदारी की आवश्यकता होती है। प्रभावी प्रबंधन के लिए स्वदेशी समुदायों, शोधकर्ताओं, नीति निर्माताओं और गैर-सरकारी संगठनों के बीच सहयोग की आवश्यकता होती है। यह सहयोग ज्ञान के आदान-प्रदान, क्षमता निर्माण और पारंपरिक ज्ञान की रक्षा करने वाली नीतियों के विकास को सुविधाजनक बना सकता है।

निष्कर्ष

भारत में पारंपरिक ज्ञान प्रणालियों का प्रबंधन एक जटिल कार्य है जिसे बौद्धिक संपदा अधिकार, दस्तावेज़ीकरण, संरक्षण और प्रसार से संबंधित मुद्दों को संबोधित करने की आवश्यकता है। पारंपरिक ज्ञान के मूल्य को पहचानकर और इसके संरक्षण और प्रचार के लिए तंत्र स्थापित करके, भारत अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण सुनिश्चित कर सकता है और सतत विकास में योगदान दे सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. Mahadevan. B, Bhat V & Pavana N. *Introduction to Indian Knowledge System: Concepts and Applications.* PHI LearningPublishers.
2. https://www.ncbi.nlm.nih.gov/pmc/articles/PMC6556961/
3. https://www.researchgate.net/publication/374373778_Indian_Knowledge_System_IKS
4. https://orientviews.wordpress.com/2013/08/21/how-colonial-india-destroyed-traditional-knowledge-systems/